इमामते सिद्दीक़ व अ़ली

आ़ला हज़रत इमाम-ए-अहले सुन्नत
इमाम अहमद रज़ा
रदि़यल्लाहो तआ़ला अन्हो

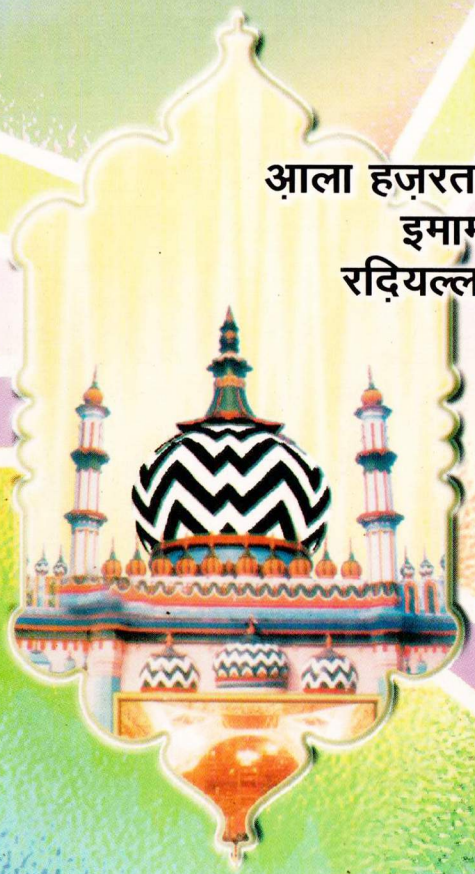

रज़ा एकेडमी मुंबई-3

सिलसिलए بسم الله الرحمن الرحيم इशाअ़त नं. २३३

غاية التحقيق في امامة العلي والصديق

का तर्जमा

इमामते

सिद्दीक़ व अ़ली

✳ तस्नीफ़े लतीफ़ ✳

आ़ला हज़रत इमामे अहले सुन्नत अश्शाह

इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ رضي الله تعالى عنه

-: बफ़ैज़ :-

हुज़ूर मुफ़्तिए अअ़्ज़म हज़रत अ़ल्लामा शाह
मुहम्मद मुस्तफ़ा रज़ा क़ादिरी नूरी (अलैहिर्रहमा)

नाशिर :

रज़ा एकेडमी

२६, कांबेकर स्ट्रीट, मुम्बई-३.
फोन नं.: ३७३७६८९-३७०२२९६

بسم اللہ الرحمن الرحیم

सवाल अव्वल

क्या फ़रमाते है ओलमा-ए-दीन इस मस्अले में के--रसूले मक्बूल صلی اللہ علیہ وسلم ने इन्तिकाल के वक्त या किसी और वक्त अपने बाद अपना जानशीन किस को मुकर्रर किया ?

अलजवाब

जानशीनी व ख़ीलाफ़त दो क़िस्म की है **1** एक ख़ास वक्त के लिए ख़लीफ़ा होना, के इमाम किसी ख़ास काम या ख़ास मकाम पर आरज़ी तौर पर किसी ख़ास वक्त के लिए दूसरे को अपना नाएब (Vicegerent) करे, जैसे बादशाह का लड़ाई में किसी को सरदार बना कर भेजना या किसी ज़िले की हुकूमत देना या मालगुज़ारी वसूल करने के लिए मुकर्रर करना या कही जाते हुए शहर का इन्तिज़ाम सुपुर्द कर जाना इस क़िस्म का ख़लीफ़ा हुज़ूर पुरनूर सैय्यदे यौमुन्नुशूर صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم وعلیہ وعلی آلہ وعترتہ وازواجہ اجمعین ने बहुत बार मुकर्रर किया । जैसे कुछ ग़ज़वात में अमीरूल मोमेनीन सिद्दीके अकबर को । कुछ में हज़रत असामा बिन ज़ैद को । "ग़ज़व-ए-ज़ातुल सलासिल" मे, हज़रत अम्र बिन आस رضی اللہ عنہ को सिपहसालार (Commander) बना कर भेजा, ज़कात वसूल करने के लिए अमीरूल मोमेनीन फ़ारूके आज़म व हज़रत ख़ालिद बिन वलीद वग़ैरा رضی اللہ تعالیٰ عنہم को मुकर्रर फ़रमाया येह भी यक़ीनन हुज़ूरे अक़दस صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ واصحابہ وسلم का ख़लीफ़ा होना है के ज़कात वसूल करना असल काम हुज़ूरे वाला صلی اللہ علیہ وسلم का है जैसा कि परवरदिगारे आलम इरशाद फ़रमाता है--خذ من اموالھم صدقۃ تطھرھم وتزکیھم الآیۃ

तर्जमा :- अए महबूब उन के माल में से ज़कात वसूल करो जिस से तुम उन्हें सुथरा और पक़ीज़ा कर दो और उन के हक़ में दुआ-ए-खैर करो ।

(क़ुरआने अ़ज़ीम, पार 11 सूरए तौबा, आयत 102) तअ़लीमे क़ुरआन के लिए क़ुरआन के पढ़ाने वाले सहाबा-ए-किराम को मुक़र्रर फ़रमाया । हज़रत अत्ताब बिन उसैद को "मक्का-ए-मुअ़ज़्ज़मा" में हज़रत मआ़ज़ बिन जबल को "विलायत जनद" में हज़रत अबू मूसा अश्अ़री को "ज़ुबैद व अ़दन" का हज़रत अबू सुफ़यान वालिद अमीर मआ़विया, या हज़रत अम्र बिन जज़्म को शहर "नजरान" का हज़रत ज़ैद बिन लुबैद को शहर "हज़र मौत" का हज़रत ख़ालिद सईद को "सनआ़" का हज़रत अम्र बिन आस को "उ़म्मान" का सरदार व सुबेदार किया । अमीरूल मोमेनीन मौला अ़ली को کرم اللہ تعالیٰ وجہہ मुल्के "यमन" का ओ़हद-ए-क़ज़ा (A Post of Justices) बख़्शा । सन 8 हिजरी में हज़रत अत्ताब رضی اللہ عنہ और सन 9 हिजरी में हज़रत सिद्दीक़े अकबर को हजीयों का अमीर बनाया । और बाज़ वक़्तों में अमीरूल मोमेनीन फ़ारूक़े आज़म को और बाज़ में हज़रत मअ़क़ल बिन यसार और बाज वक़्तों में हज़रत अक़्बा को क़ाज़ी का ओ़हदह (A Post of Justices) दिया । ग़ज़व-ए-तुबूक को तशरीफ़ ले जाते वक़्त अमीरूल मोमेनीन मुरतज़ा अ़ली کرم اللہ وجہہ को अहले बैत-ए-किराम और ग़ज़व-ए-बद्र में हज़रत अबूलबाबा, और तेरा ग़ज़वात में हज़रत अम्र बिन उम्मे मक्तूम को मदीन-ए-तय्यबा का सरपरस्त व अमीर फ़रमाया ।

2 दूसरी क़िस्म का ख़लीफ़ा होना । वोह येह है के इमाम का अपने बाद किसी के इमामते क़ुब्रा (बड़ी इमामत, व हमेशा हमेशा के लिए ख़लीफ़ा होने) की वसीयत फ़रमाना इस का सुबूत साफ़ खुल कर ऐलान व नाम के साथ हुज़ूरे आ़ला صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم ने किसी के वास्ते न फ़रमाया वरना सहाबा-ए-किराम رضی اللہ تعالیٰ عنہم ज़रूर पेश करते और क़बील-ए-कुरैश व अन्सार में ख़िलाफ़त को ले कर बहेस व मुबाहेसे व मशवरे न होते । अमीरूल मोमेनीन, इमामुल अशाजीन, असदुल्लाह ग़ालिब, मौला अ़ली मुरतज़ा کرم اللہ تعالیٰ وجہہ الکریم से सही व मज़बूत सुबूतों के साथ येह साबित है के जब उन से (उन के विसाल के वक़्त) अ़र्ज़ की गई---- استخلف علینا - हम पर किसी को ख़लीफ़ा कर दीजिये फ़रमाया--- لا ولکن اترککم کما ترککم

رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم मै किसी को ख़लीफ़ा न करूँगा बल्कि यूँहीं छोड़ूँगा जैसे रसूलुल्लाह صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم छोड़ गए थे ।

اخرجہ الامام احمد بسند حسن والبزار بسند قوی والدارقطنی وغیرہم (इस हदीस को रिवायत किया इमाम अहमद ने सही सनद के साथ और बज़्ज़ार ने मज़बूत सुबूत के साथ और दारमी वग़ैरा ने)

"बज़्ज़ार" ने सही सनद के साथ रिवायत की--हज़रत मौला अ़ली کرم اللہ وجہہ ने फ़रमाया--- ما استخلف رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فاستخلف علیکم - रसूलुल्लाह صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم ने किसी को ख़लीफ़ा न किया के मै करूँ ।

"दरक़ुतनी" की रिवायत में है इरशाद फ़रमाया----------

دخلنا علی رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فقلنا یا رسول اللہ استخلف علینا قال لا ان یعلم اللہ فیکم خیرا یول علیکم خیرکم قال علی رضی اللہ تعالیٰ عنہ فعلم اللہ فینا خیرا فولی علینا ابا بکر ۔

हम ने हुज़ूरे अक़दस हुज़ूर सैय्यदुल मुर्सलीन صلی اللہ علیہ وسلم - की ख़िदमत में हाज़िर हो कर अ़र्ज़ की या रसूलुल्लाह हम पर किसी को ख़लीफ़ा मुक़र्रर फ़रमा दीजिये इरशाद फ़रमाया--नहीं--अगर अल्लाह तआ़ला तुम में भलाई जानेगा तो जो तुम में सब से बेहतर है उसे तुम पर सरदार फ़रमा देगा । हज़रत मौला अ़ली ने फ़रमाया रब्बुल ईज़्ज़त جل وعلا ने हम में भलाई जानी तो अबू बक्र को हमारा सरदार फ़रमाया ।

इमाम इसहाक़ बिन राहुया व दारक़ुतनी व इब्ने असाकर वग़ैरा बहुत ज़्यादा रावियों से रिवायत करते है कि-----दो शख़्सों ने अमीरूल मोमेनीन मौला अ़ली کرم اللہ تعالیٰ وجہہ से उनके ख़िलाफ़त के ज़माने में ख़िलाफ़त के बारे में सवाल किया--- اعھد عھدہ الیک النبی صلی اللہ علیہ وسلم ام رای رایتہ क्या येह कोई अहेद व वादा हुज़ूरे अक़दस صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم की तरफ़ से है या आप की राए है ? फ़रमाया بل رای رایتہ बल्कि हमारी राए है---

اما ان یکون عندی عھدی من النبی صلی اللہ علیہ وسلم عھدہ الی فی ذلک فلا واللہ لئن کنت اول من صدق بہ فلا اکون اول من کذب علیہ

रहा येह के मेरे लिए हुज़ूर पुरनूर صلی اللہ علیہ وسلم ने कोई ओहदा या मनसब

मुक़र्रर फ़रमा दिया हो सो ख़ुदा की क़सम ऐसा नही अगर सब से पहले मै ने हुज़ूर (के नबी होने) की तस्दीक़ की तो सब से पहले हुज़ूर पर झूट गड़ने वाला न होंगा--- ولو کان عندی منہ عہد فی ذلک ماترکت اخا بنی تیم بن مرۃ وعمر بن الخطاب یثوبان علی منبرہ ولقاتلتھا بیدی ولو لم اجد الا بردتی ھذہ-

और अगर हुज़ूरे वाला صلی اللہ علیہ وسلم की तरफ़ से मेरे पास कोई ओहदा होता तो मै अबू बक्र व उमर को मिम्बरे रसूल हुज़ूरे अक़दस صلی اللہ علیہ وسلم पर बैठने तक न देता और बेशक अपने हाथ से उनसे जंग करता अगरच अपनी चादर के सिवा कोई साथी न पाता,--- ولکن رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم لم یقتل قتلا ولم یمت فجاءۃ مکث فی مرضہ ایاما ولیالی یاتیہ المؤذن یؤذنہ بالصلاۃ فیأمر ابا بکر فیصلی بالناس وھو یری مکانی ثم یاتیہ المؤذن فیؤذن بالصلاۃ فیأمر ابا بکر فیصلی بالناس وھو یری-

बात येह हुई के रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم मआज़ल्लाह कुछ क़त्ल न हुए न अचानक इन्तेक़ाल फ़रमाया बल्कि कई दिन रात हुज़ूर को मर्ज़ (बीमारी) में गुज़रे मौअज़्ज़िन आता नमाज़ की ख़बर देता हुज़ूर अबू बक्र को इमामत का हुक्म फ़रमाते हलाँकि मै कहीं ग़ायब न था---

ولقد ارادت امرأۃ من نسائہ تصرفہ عن ابی بکر فابی وغضب وقال انتن صواحب یوسف مروا ابا بکر فلیصل بالناس-

और ख़ुदा की क़सम अज़वाजे मोतहरात (हुज़ूर صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم की बीबीयों) से एक बीबी ने इस मुआमले को अबू बक्र से फेरना चाहा (यानी येह चहा कि अबू बक्र इमामत न करे) हुज़ूरे अक़दस صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم ने न माना और ग़ज़ब (नाराज़गी का इज़हार) किया और फ़रमाया तुम वही युसूफ़ علیہ السلام वालियाँ हो अबू बक्र को हुक्म दो के इमामत करे---- فلما قبض رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نظر فی امورنا فاخترنا من رضیہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم لدیننا وکانت الصلاۃ عظیم الاسلام وقوام الدین فبایعنا ابو بکر رضی اللہ تعالیٰ عنہ وکان لذلک اھلا لم یختلف علیہ منا اثنان-

फिर जब हुज़ूर पुरनूर صلی اللہ علیہ وآلہ واصحابہ وسلم ने इन्तेक़ाल फ़रमाया हम ने अपने कामों में नज़र की तो अपनी दुनिया यानी ख़िलाफ़त के लिए उसे

पंसद कर लिया जिसे रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم ने हमारे दीन यानी नमाज़ के लिए पंसद फ़रमाया था के नमाज़ तो इस्लाम की बुज़ुर्गी और दीन की दुरूस्ती थी लिहाज़ा हम ने अबू बकर رضی اللہ تعالیٰ عنہ से बैत की और वोह उस के लायक़ थे, हम में किसी ने इस बारे में ख़िलाफ़ न किया येह सब कुछ इरशाद कर के हज़रत मौला अ़ली کرم اللہ تعالیٰ وجہہ الاسنیٰ ने फ़रमाया------ فادیت الی ابی بکر حقہ وعرفت لہ طاعتہ وغزوات معہ فی جنودہ وکنت آخذ اذا اعطانی واغزو اذا اغزانی واضرب بین یدیہ الحدود بسوطی۔ पस मै ने अबू बकर को उन का हक़ दिया और उन की अताअ़त लाज़िम जानी और उन के साथ हो कर उनके लश्करों में जिहाद किया जब वोह मुझे बैतुल माल से कुछ देते मै ले लेता और जब मुझे लड़ाई पर भेजते मै जाता और उन के सामने (मुजरिमों को) अपने कोड़े से सज़ा देता । फिर बिल्कुल यही मज़मून अमीरूल मोमेनीन फ़ारूक़े आज़म व अमीरूल मोमेनीन ऊसमाने ग़नी की निस्बत इरशाद फ़रमाया ।

हाँ अलबत्ता (हुज़ूर صلی اللہ علیہ وسلم ने) अंपने ख़ूबसूरत ज़ाहिरी इशारों से बहुत बार (अपने बाद होने वाले जानशिनों के मुत्अ़ल्लिक़) इरशाद फ़रमाया है ।

1 एक बार इरशाद फ़रमाया----मै ने ख़्वाब देखा के मै एक कूएँ पर हूँ उस पर एक ड़ोल है मै उस से पानी भरता रहा जब तक अल्लाह ने चाहा, फिर अबू बक्र ने ड़ोल ले लिया दो एक हाथ खींचा फिर वोह ड़ोल एक पुल हो गया जिसे "चर्सा" कहते है उसे उमर ने लिया तो मै ने किसी सरदार ज़बरदस्त को इस काम में उनकी तरह़ न देखा यहाँ तक कि तमाम लोगों को सेराब कर दिया के पानी पी पी कर अपने अपने घरों को वापस हुए । رواہ الشیخان عن ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما

(रिवायत किया इसे बुख़ारी व मुस्लिम शरीफ़ ने हज़रत अबू हुरैरह व अ़ब्दुल्लाह इब्ने उमर से)

2 अमीरूल मोमेनीन मौला अ़ली کرم اللہ تعالیٰ وجہہ फ़रमाते है मै ने कई बार हुज़ूरे अक़दस صلی اللہ علیہ وسلم को बार बार फ़रमाते सुना के "मै और अबू बक्र व उमर ने किया, मै और अबू बक्र व उमर चले ।

رواہ الشیخان عن ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما —

(रिवायत किया इसे बुख़ारी व मुस्लिम शरीफ़ ने हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अब्बास رضی اللہ عنہما से)

3 एक बार हुज़ूरे अक़दस صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم ने फ़रमाया----आज रात एक नेक मर्द (यानी ख़ुद हुज़ूर पुरनूर صلی اللہ علیہ وسلم) ने ख़्वाब देखा के अबू बक्र रसूलुल्लाह صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم से तअ़ल्लुक़ रखते है और उमर--अबू बक्र से और ऊसमान--उमर से । हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह अन्सारी رضی اللہ تعالیٰ عنہ फ़रमाते है जब हम हुज़ूरे अक़दस صلی اللہ علیہ وسلم की ख़िदमत से उठे आपस में तज़केरह किया के वोह नेक मर्द तो हुज़ूरे अक़दस صلی اللہ علیہ وسلم है और बाज़ का बाज़ से तअ़ल्लुक़ वोह इस चीज़ का ख़लीफ़ा होना है जिस के साथ हुज़ूर पुरनूर صلی اللہ علیہ وسلم इस दुनिया में तशरीफ़ लाए है । رواہ عنہ ابوداؤد والحاکم (रिवायत किया इसे अबू दाऊद व हाकिम ने)

4 हज़रत अनस رضی اللہ تعالیٰ عنہ फ़रमाते है मुझे बनी मुतलक़ ने हुज़ूर सैय्यदुल मुर्सलीन صلی اللہ علیہ وسلم की ख़िदमत में भेजा के हुज़ूर से पूछो के हुज़ूर के बाद हम अपने ज़कात के मालों को किस के पास भेजे ? (इस के जवाब में हुज़ूर صلی اللہ علیہ وسلم ने फ़रमाया) अबू बक्र के पास । अ़र्ज़ कि अगर उन्हें कोई हादसा पेश आए तो किसे दें फ़रमाया---उमर को, अ़र्ज़ कि जब उन को भी अगर कोई हदसा पेश आ जाए तो, फ़रमाया---ऊसमान को । رواہ عنہ فی المستدرک وصححہ (रिवायत किया इसे मुस्तदरिक ने और कहा के येह हदीस सही है)

5 एक औरत हुज़ूर صلی اللہ علیہ وسلم की ख़िदमत में हाज़िर हुई और कुछ सवाल किया (यानी कुछ माँगा) हुज़ूरे अक़दस صلی اللہ علیہ وسلم ने हुक्म फ़रमाया के फिर हाज़िर हो, उन्हों ने अ़र्ज़ की मैं जब आऊँ और हुज़ूर को न पाऊँ ? फ़रमाया---मुझे न पाए तो अबू बक्र के पास आना ।

(रिवायत किया इसे बुख़ारी व मुस्लिम ने हज़रत जुबीर बिन मुतअम رضی اللہ عنہ से)

6 यूँहीं एक मर्द से हुज़ूर صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم ने इरशाद फ़रमाया मैं न हो तो अबू बक्र के पास आना अ़र्ज़ की जब उन्हें न पाऊँ ? फ़रमाया---तो उमर के पास आना, अर्ज़ की जब वोह भी न मिलें ? फ़रमाया तो ऊसमान के पास आना । اخرجہ ابونعیم فی الحلیہ والطبرانی عن سہل بن ابی حثمۃ رضی اللہ عنہ

(रिवायत किया इसे अबू नईम ने अपनी हुलिया में और तबरानी ने हज़रत सहेल बिन अबी हसमह से)

7 (हुज़ूर ﷺ ने) एक शख़्स से कुछ ऊँट क़रजों में ख़रीदे वोह वापस जा रहा था के रास्ते में मौला अ़ली کرم اللہ وجہہ मिले हाल पूछा उस ने बयान किया, फ़रमाया हुज़ूरे अक़दस ﷺ की ख़िदतम में फिर हाज़िर हो और अर्ज़ कर--अगर हुज़ूर को कुछ हादसा पेश आए तो मेरे ऊँटों की क़ीमत कौन अदा करेगा (वोह आया और अर्ज़ किया) हुज़ूर ने फ़रमाया--- अबू बक्र (رضی اللہ تعالیٰ عنہ) हज़रत अ़ली ने फिर पूछवाया (अबू बक्र न हो तो कौन अदा करेगा) फ़रमाया-- उमर, फिर पूछा अगर उन्हें भी कुछ हादसा पेश आ जाए तो कौन देगा ? फ़रमाया-- हाए नादान जब उमर मर जाए तो अगर मर सके तो मर जाना ।

رواہ الطبرانی فی الکبیر عن عصمۃ بن مالک رضی اللہ تعالیٰ عنہ وحسنہ الامام جلال الدین سیوطی (रिवायत किया तबरानी ने अपनी कबीर में हज़रत असमत इब्ने मालिक رضی اللہ عنہ से और इमाम जलालुद्दीन सुयूती ने)

8 इन्ही ख़ूबसूरत इशारों में से है हुज़ूर पुरनूर ﷺ का अय्यामे मर्ज़े वफ़ात (यानी वोह बीमारी जिस में हुज़ूर ﷺ ने इस दुनिया से पर्दा फ़रमाया) में सिद्दीक़े अकबर رضی اللہ تعالیٰ عنہ को अपनी जगह मुसलमानों की इमामत पर क़ायम करना और दूसरे की इमामत पर राज़ी न होना और ग़ज़ब (ना राज़गी का इज़हार) फ़रमाया जिस से अमीरूल मोमेनीन मौला अ़ली کرم اللہ تعالیٰ وجہہ ने ﷺ सुबूत समझा के रसूलुल्लाह ﷺ ने सिद्दीक़े अकबर को चुन लिया है हमारे दीन की पेशवाई को क्या उन्हें हम पंसद न करें अपनी दुनिया की इमामत को ।

9 और निहायत रौशन व खुला हुआ ज़ाहिर हुज़ूरे अक़दस का वोह इरशाद है के इमाम अहमद व तिर्मीज़ी ने और इब्ने माजा व इब्ने हिब्बान व हाकिम ने सही सुबूतों के साथ और अबूल मुहासिन रूयानी ने हज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमान رضی اللہ تعالیٰ عنہما से और तिर्मीज़ी व हाकिम ने हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद से और तबरानी ने हज़रत अबू दरदह और इब्ने अदी ने कामिल में हज़रत अनस बिन मालिक رضی اللہ تعالیٰ عنہ से रिवायत किया के हुज़ूर पुरनूर सैय्यदे यौमुन्नुशूर ﷺ ने फ़रमया--- انی لا ادری ما بقائی فیکم فاقتدوا بالذین من بعدی ابی بکر

وفی لفظ اقتدوا باللذین من بعدی من اصحابی ابی بکر وعمر -

मै नही जानता मेरा रहना तुम में कब तक हो लिहाज़ा तुम्हे हुक्म फ़रमाता हूँ के मेरे उन दो सहाबियों की पैरवी करो जो मेरे बाद होंगे अबू बक्र व उमर رضی اللہ تعالیٰ عنہما ।

10 एक बार आख़िर हयात में साफ़ खुल कर भी फ़रमा देना चाहा था फिर ख़ुदा और मुसलमानों पर छोड़ कर ज़रूरत न समझी । इमाम अहमद व इमाम बुख़ारी व इमाम मुस्लिम, उम्मुल मोमेनीन आएशा सिद्दीक़ा رضی اللہ تعالیٰ عنہا से रिवायत करते हैं के--वोह इरशाद फ़रमाती है------

قال لی رسول صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فی مرضہ الذی مات
فیہ ادعی لی اباک واخاک حتی اکتب کتابا فانی اخاف ان یتمنی
متمن ویقول قائل انا اولی ویابی اللہ والمؤمنون الا ابابکر ۔

हुज़ूरे अक़दस सैय्यदे आलम صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم जिस मर्ज़ मे इन्तेक़ाल फ़रमाने को है उस में मुझ से फ़रमाया अपने बाप और भाई को बुलाले के मै एक वसीयत तहरीर फ़रमा दूँ के मुझे ख़ौफ़ है कोई तमन्ना करने वाला तमन्ना करे और कोई कहने वाला कह उठे के मै ज़्यादा हक़दार हूँ, और अल्लाह न मानेगा और मुसलमान न मानेंगे मगर अबू बक्र को ।

इमाम अहमद की हदीस के अलफाज़ येह है कि फ़रमाया---

ادعی لی عبدالرحمٰن بن ابی بکر اکتب لابی بکر کتابا لایختلف
علیہ احد ثم قال دعیہ معاذ اللہ ان یختلف المؤمنون فی ابی بکر -

अब्दुर्रहमान बिन अबी बक्र को बुलालो के मै अबू बक्र के लिए वसियत लिख दूँ के उन पर कोई इख़्तिलाफ़ न करे फिर फ़रमाया रहने दो ख़ुदा की पनाह के मुसलमान इख़्तिलाफ़ करें अबू बक्र के बारे में ।

सवाल दुव्वम

खुलफ़ा-ए-सलासा (यानी हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़, हज़रत उमर फ़ारूक़, व हज़रत ऊसमाने ग़नी رضی اللہ عنہم) से हज़रत अ़ली کرم اللہ تعالیٰ وجہہ अफ़ज़ल थे या कम (थे) ?

अलजवाब

بسم اللہ الرحمن الرحیم

अहले सुन्नत व जमाअ़त رحمہم اللہ تعالیٰ का इजमा (इत्तेफ़ाक़) है के मुर्सीलीन फ़रिश्तों व इन्सानों में रसूलों व अम्बिया के बाद हज़राते खुलफ़ा-ए-अरबा (यानी चार खुलफ़ा, हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़, हज़रत उमर, हज़रत ऊसमाने ग़नी, हज़रत मौला अ़ली, رضی اللہ عنہم) तमाम अल्लाह की मख़्लूक़ से अफ़ज़ल हैं, जो पहले हुए और आगे होंगे उन तमाम में कोई शख़्स उन की बुज़ुर्गी व अ़ज़मत व इ़ज़्ज़त व शान व मक़बूलियत व करामत व विलायत को नहीं पहुँता — ان الفضل بید اللہ یوتیہ من یشاء واللہ ذو الفضل العظیم

फिर इन खुल्फ़ा में तरतीब यूँ है के सब से अफ़ज़ल सिद्दीक़े अकबर, फिर फ़ारूक़े आ़ज़म, फिर ऊसमाने ग़नी, फिर मौला अ़ली, इस बात पर क़ुरआने अ़ज़ीम की आयतें व हुज़ूर पुरनूर नबी-ए-करीम ﷺ की हदीसें और ख़ूबसूरत ज़ाहिर अमीरूल मोमेनीन मौला अ़ली کرم اللہ وجہہ के इरशादात है व दीगर अहले बैत के अइम्मा-ए-तहारत व सहाबा-ए-किराम का व ताबईन-ए-उ़ज़्ज़ाम का इजमा है, और औलिया-ए-उम्मत व ओ़लमा-ए-मिल्लत رضی اللہ تعالیٰ عنہم اجمعین के साफ़ खुले हुए बयानात है और इस क़द्र दलीलें के जिन का घेराओं नहीं हो सकता । फ़क़ीर غفر اللہ تعالیٰ ने इस मस्अले में एक अ़ज़ीम बड़ी किताब दो जिल्दों पर फैली हुई लिखी जिस का नाम "مطلع القمرین فی ابانۃ سبقۃ العمرین" है और ख़ास क़ुरआने अ़ज़ीम की आयते करीमा ان اکرمکم عند اللہ اتقکم की तफ़्सीर में हज़रत सिद्दीक़े अकबर رضی اللہ عنہ के अफ़ज़ल होने की हक़ीक़त के सुबूत में और इस अक़ीदे के ख़िलाफ़ बकवास करने वालों के रद्द में एक

अज़ीम रिसाला " الزلال الانقى من بحر سبقة الاتقى " लिखा है इस मज़बून की तफ़्सील उन किताबों में है । यहाँ सिर्फ़ अइम्मा-ए-अहले बैत-ए-किराम के चन्द इरशादात पर ही बस करता हूँ ।

अल्लाह عزوجل की बेशुमार रहमत व रिज़वान व बरकत अमीरूल मोमेनीन असदे हैदर, हक़ कहने वाले हक़ सुन्ने वाले हक़ पसंद करने वाले मौला अ़ली کرم اللہ تعالیٰ وجہہ पर के उन्हों ने इस मस्अले को खूब तफ़्सील से ज़ाहिर फ़रमाया के अपने ख़िलाफ़त के ज़माने में मस्जिदे ज़ामा में मिम्बर पर तशरीफ़ फ़रमा हो हज़रत सिद्दीके अकबर व हज़रत उमर के अपनी ज़ाते पाक और हुज़ूर सैय्यदे आ़लम صلی اللہ علیہ وسلم की तमाम उम्मत से अफ़ज़ल व बेहतर होने को ऐसा रौशन तौर पर इरशाद किया जिस में मुख़ालेफ़त करने वालों को किसी तरह के शक व इन्कार की गुनजाइश नही । और जो इस में शक करे उसे अस्सी (80) कोड़े लागाने का मुस्तहीक़ ठहराया । हज़रत मौला अ़ली کرم اللہ وجہہ से इस हदीस के रिवायत करने वाले अस्सी (80) से ज़्यादा सहाबा व ताबईन رضوان اللہ علیہم اجمعین है ।

"सुवाइके इमाम इब्ने हजर मक्की" में है------------

قال الذھبی وقد تواتر ذلک عنہ فی خلافتہ وکرسی مملکتہ وبین الجم الغفیر من شیعتہ ثم بسط الاسانید الصحیحۃ فی ذلک قال ویقال رواہ عنہ نیف وثمانون نفسا وعدد منھم جماعۃ ثم قال فقبح اللہ الرافضۃ ما اجھلہم

यहाँ तक कि बाज़ शीआ मुसन्निफ़ जैसे अब्दुर्रज़ाक मोहद्दिस साहब, ने कहा---"जब ख़ूद हज़रत मौला अ़ली کرم اللہ تعالیٰ وجہہ الاسنیٰ उन्हे (यानी हज़रत सिद्दीके अकबर, व हज़रत फ़ारूके आज़म رضی اللہ عنہما) को अपने से ज़्यादा फ़ज़ीलत देते है तो मुझे इस अक़ीदे से कब नुक़सान है मुझे येह गुनाह क्या थोड़ा है के अ़ली से मुहब्बत रखूँ और अ़ली के ख़िलाफ़ करूँ ।

अब चन्द हदीसें मुरतज़वी (यानी हज़रत अली से रिवायत हुई हदीसे) सुनिये ।

हदीस **1** सही बुख़ारी शरीफ़ में सैय्यदना व इब्ने सैय्यदना इमाम मुहम्मद बिन हन्फ़िया जो हज़रत अ़ली के साहबज़ादे है رضی اللہ تعالیٰ عنہما उन से रिवायत है कि-----------------------------

قلت لابی ای الناس خیر بعد النبی صلی اللہ علیہ وسلم قال ابو بکر قال قالت ثم من قال عمر۔

"मै ने अपने वालिद (मौला अ़ली کرم اللہ وجہہ) से अ़र्ज़ की रसूलुल्लाह صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم के बाद सब आदमियों में बेहतर कौन है ? (मौला अ़ली کرم اللہ وجہہ) ने फ़रमाया अबू बक्र । मै ने अ़र्ज़ की फिर कौन ? फ़रमाया उमर رضی اللہ تعالیٰ عنہم ।

हदीस ❷ इमाम बुख़ारी अपनी सही और इब्ने माजा सुनन में अब्दुल्लाह बिन सलमा के ज़रिये से अमीरूल मोमेनीन मौला अ़ली رضی اللہ تعالیٰ عنہ से रिवायत करते है के मौला अ़ली ने फ़रमाया------ خیر الناس بعد رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم ابو بکر و خیر الناس بعد ابو بکر عمر۔

हुज़ूर सैय्यदे आ़लम صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم के बाद इन्सानों में ब़ेहतरीन मर्द अबू बक्र है, और अबू बक्र के बाद उमर फ़ारूक़ ہذا حدیث ابن ماجہ (येह हदीस इब्ने माजा की है)

हदीस ❸ इमाम अबूल क़ासिम इस्माईल बिन मुहम्मद बिन फ़ज़ल बलख़ी "किताबुल सुन्नत" में रिवायत करते है-----

امام ابو القاسم اسمعیل بن محمد بن الفضل بلخی "کتاب السنۃ" اخبرنا ابو بکر بن مردویہ ثنا سلیمن بن احمد ثنا الحسن بن المنصور الرمانی ثنا داود بن معاذ ثنا ابو سلمۃ العتکی عبد اللہ بن عبد الرحمن عن سعید بن ابی عروبۃ عن منصور بن المعتمر عن ابراھیم عن علقمۃ قال بلغ علیا ان اقواما یفضلونہ علی ابی بکر و عمر فصعد المنبر فحمد اللہ واثنی علیہ ثم قال یا ایھا الناس انہ بلغنی ان اقواما یفضلونی علی ابی بکر و عمر و لو کنت تقدمت فیہ لعاقبت فیہ فمن سمعتہ بعد ھذا الیوم یقول ھذا فھو مفتر علیہ حد المفتری ثم قال ان خیر ھذہ الامۃ بعد نبیھا ابو بکر ثم عمر ثم اللہ اعلم بالخیر بعد قال وفی الجلس الحسن بن علی فقال واللہ لو سمی الثالث لسمی عثمن۔

यानी हज़रत अलक़मह رضی اللہ تعالیٰ عنہ फ़रमाते है अमीरूल मोमेनीन मौला अ़ली کرم اللہ تعالیٰ وجہہ को ख़बर पहुँची के कुछ लोग उन्हें हज़रत सिद्दीक़े अकबर व हज़रत फ़ारूक़े आज़म - رضی اللہ تعالیٰ عنہما से अफ़ज़ल बताते है येह सुन कर आप मिम्बर पर जलवा फ़रमा हुए और अल्लाह

की हम्द व सना के बाद फिर फ़रमाया---"अए लोगों मुझे ख़बर पहुँची के कुछ लोग मुझे अबू बक्र सिद्दीक़ व हज़रत उमर से अफ़ज़ल कहते है इस बारे में अगर मै ने पहले से हुक्म सुना दिया होता तो बेशक सज़ा देता आज से जिसे ऐसा कहते सुनूँगा वोह फ़ितना फैलाने वाला कमीना है उस की सज़ा अस्सी (80) कोड़े है, फिर फ़रमाया बेशक नबी صلى الله تعالى عليه وسلم के बाद उम्मत में अफ़ज़ल अबू बक्र है फिर उमर फिर ख़ुदा ख़ूब जानता है के उन के बाद कौन सब से बेहतर है" । हज़रत अलक़मह फ़रमाते है---उस मजलिस में सैय्यदना इमाम हसन मुजतबा رضى الله تعالى عنه भी तशरीफ़ फ़रमा थे उन्हों ने फ़रमाया----"ख़ुदा की क़सम अगर मौला अ़ली كرم الله وجهه तीसरे का नाम लेते तो ऊसमाने ग़नी का नाम लेत" رضى الله تعالى عنهم اجمعين ।

हदीस **4** इमाम दारकुतनी सुनन में और अबू उमर बिन अब्दुलबर इस्तीयाब में हुक्म बिन हजल से रिवायत करते है के मौला अ़ली كرم الله تعالى وجهه ने फ़रमाया--- لا اجد احدا افضلنى على ابى بكر وعمر الا جلدته حد المفترى "मै जिसे पाऊँगा के मुझे अबू बकर व उमर से अफ़ज़ल कहता है उसे फ़ितना फैलाने की सज़ा दूँगा" । इमाम ज़ैहबी फ़रमाते है----येह हदीस सही है ।

हदीस **5** सुनन दारकुतनी में हज़रत अबू हुज़ैफ़ा رضى الله عنه से रिवायत है--जो हुज़ूर सैय्यदे आ़लम صلى الله تعالى عليه وسلم के सहाबी और अमीरूल मोमेनीन मौला अ़ली كرم الله تعالى وجهه के जिगरी दोस्त थे और हज़रत अ़ली उन्हें "वहेबुल ख़ैर" (यानी भलाई बख़्शा हुआ) फ़रमाया करते थे उन से रिवायत है कि-------------

انه كان يرى ان عليا افضل الامة فسمع اقواما يخالفونه فحزن حزنا شديدا فقال له على بعد ان اخذ بيده وادخله بيته ما احزنك يا ابا جحيفة فذكر له الخبر فقال له الا اخبرك بخير الامة خيرها ابو بكر ثم عمر قال ابو جحيفة فاعطيت الله عهدا ان لا اكتم هذا الحديث

यानी उन के ख़्याल में मौला अ़ली كرم الله وجهه तमाम उम्मत से अफ़ज़ल थे उन्हों ने कुछ लोगों को इस के ख़िलाफ कहते सुना (यानी सिद्दीके अकबर व फ़ारूके आज़म رضى الله عنهما को हजरत अली से ज्यादा अफज़ल कहते सुना) उन्हें

सख़्त रंज हुआ हज़रत मौला अ़ली کرم اللہ تعالیٰ وجہہ उन का हाथ पकड़ कर अपने घर में ले गए ग़म की वजह पूछी उन्हों ने अर्ज़ किया (मौला अ़ली رضی اللہ عنہ) ने फ़रमाया---"मैं तुम्हें न बता दूँ के उम्मत में सब से बेहतर कौन है ! अबू बक्र है । फिर उमर फ़ारूक़"। हज़रत अबू हुजैफ़ा رضی اللہ تعالیٰ عنہ फ़रमाते है मैं ने अल्लाह से अहद किया कि जब तक जीऊँगा इस हदीस को न छुपाऊँगा बाद इस के कि हज़रत मौला अ़ली کرم اللہ وجہہ ने मुझ से ख़ूद ऐसा फ़रमाया ।

हदीस **6** इमाम अहमद अपनी मुसनद में ज़ीयुल यदैन رضی اللہ تعالیٰ عنہ में अबू हाज़िम से रिवायत करते है------

قال جاء رجل الی علی بن الحسین رضی اللہ عنہما فقال ما کان منزلۃ ابی بکر و عمر من النبی صلی اللہ علیہ وسلم فقال منزلتہما الساعۃ وہما ضجیعاہ ـ

एक शख़्स ने हज़रत इमाम ज़ैनुल आ़बेदीन رضی اللہ عنہ की ख़िदमत में हाज़िर हो कर अर्ज़ कि हुज़ूर सैय्यदे आ़लम — صلی اللہ علیہ وسلم की बारगाह में अबू बक्र व उमर का मरतबा क्या था ? फ़रमाया---"जो मरतबा उनका अब है कि हुज़ूर के पहलू में आराम कर रहे है" ।

हदीस **7** "दारक़ुतनी" हज़रत इमाम बाक़र رضی اللہ تعالیٰ عنہ से रिवायत करते है के उन्हों ने इरशाद फ़रमाया---

اجمع بنو فاطمۃ رضی اللہ تعالیٰ عنہم علی ان یقولوا فی الشیخین احسن ما یکون من القول ـ

"यानी बुतुलुज़्ज़हरह हज़रत फ़ातेमा صلی اللہ علیہ علی ابیہا الکریم وعلیہا وعلیہم وسلم की तमाम औलादों का इजमा व इत्तेफ़ाक़ है के हज़रत अबू बक्र व हज़रत उमर - رضی اللہ تعالیٰ عنہما के हक़ में वोह बात कहें जो सब से बेहतर हों" । ज़ाहिर है के सब से बेहतर बातें उसी के हक़ में कही जाएँगी जो सब से बेहतर हो ।

हदीस **8** इमाम इब्ने असाकर वग़ैरा सालिम बिन अबी जअ़द से रिवायत क़रते है------

قلت لمحمد بن الحنیفۃ ھل کان ابوبکر اول القوم اسلاما قال لا قلت فبم علا ابوبکر وسبق حتی لا یذکر احد بخیر ابی بکر قال لانہ کان افضلہم اسلاما حین اسلم حتی لحق

यानी मै ने इमाम मुहम्मद बिन हन्फ़िया बिन मौला अ़ली رضی اللہ تعالیٰ عنہ से अर्ज़ की---क्या अबू बक्र सब से पहले ईमान लाए थे ? फ़रमाया नहीं । मै ने कहा--फिर क्या बात है के अबू बक्र सब से उँचे रहे और सब से आगे निकल गए यहाँ तक के लोग उनके सिवा किसी का ज़िक्र ही नहीं करते ? फ़रमाया---येह इस लिए के वोह इस्लाम में सब से अफ़ज़ल थे जब से इस्लाम लाए यहाँ तक के अपने रब से मिले ।

हदीस **9** इमाम अबूल हसन दारक़ुतनी जुनदब असदी से रिवायत करते है के इमाम मुहम्मद बिन अ़ब्दुल्लाह महेज़ बिन हसन मुसन्ना बिन हसन मुजतबा बिन अ़ली मुरतज़ा کرم اللہ وجہہ के पास कुछ कूफ़ा के लोगों ने हाज़िर हो कर अबू बक्र व हज़रत उमर رضی اللہ تعالیٰ عنہم के बारे में सवाल किया इमामे मम्दूह (यानी इमाम मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह महेज़) ने मेरी तरफ़ मुतवजह हो कर फ़रमाया----

انظر الی اہل بلادک یسألونی عن ابوبکر وعمر لہما افضل عندی من علی -

"अपने शहर वालों को देखो मुझ से अबू बक्र व उमर رضی اللہ عنہ के बारे में सवाल करते है । वोह दोनों मेरे नज़दीक बेशक मौला अ़ली से अफ़ज़ल है" رضی اللہ تعالیٰ عنہم اجمعین ।

येह इमामे अजल हज़रत इमाम हसन मुजतबा के पोते और हज़रत इमाम हुसैन शहीदे कर्बला के नवासे है इन का मुबारक लक़ब "नफ़्से ज़कय्या" है उनके वालिद हज़रत अब्दुल्लाह महेज़ के सब में पहले हसनी हुसैनी दोनों शरफ़ के हासिल करने वाले हुए लिहाज़ा "महेज़" कहलाए अपने ज़माने में बनी हाशिम के सरदार थे उन के वालिदे माज़िद इमाम हसन मुसन्ना और वालिदह माजेदह हज़रत फ़ातेमा-ए-सुगरा है जो हज़रत इमाम हुसैन की साहबज़ादी है । صلی اللہ علیہ وعلی ابیہم وعلیہم وبارک وسلم

हदीस **10** इमाम हाफ़िज़ उमर बिन शुब्ह हज़रत इमामे अजल सैय्यद ज़ैद शहीद इब्ने इमाम अ़ली सज्जाद ज़ैनुल आ़बेदीन इब्ने हुसैन सईद शहीद صلوات اللہ تعالیٰ وتسلیماتہ علی جدہم الکرام وعلیہم -- से रिवायत करते है के उन्हों ने कूफ़ियों से फ़रमाया-----------

انطلقت الخوارج فبرئت ممن دون ابی بکر و عمر ولم یستطیعوا ان یقولو
افیهما شیئاً وانطلقتم انتم فطفرتم فبرئتم منهما فمن بقی فو اللہ مابقی احد الا برئتم منہ

यानी ख़ारजियों ने उठ कर उन्हे गालियाँ दी जो अबू बक्र व उमर से कम थे यानी ऊसमान व अ़ली رضی اللہ تعالیٰ عنہم मगर अबू बक्र व उमर की शान में कुछ कहने की गुनजाईश न पाई और तुम ने अए कूफ़ियों उपर छलाँग लगाई के अबू बक्र व उमर को गालियाँ दी तो अब कौन रह गया ! खुदा की क़सम अब कोई न रहा जिस को तुम ने गालियाँ न दी ।

इमामे ज़ैद शहीद رضی اللہ عنہا का येह इरशाद ख़ानदाने ज़ैद के हम ग़ुलामों के लिए بحمد اللہ काफ़ी व मुकम्मल है ।

'शहर बलगराम' के सैय्यदों के सैय्यद हज़रत मरजउल फ़रयक़ीन, मजमउल तरफ़ैन, शरीअ़त व तरीक़त के दरया, बक़यतुल सलफ़, हुज्जतुल ख़ल्फ़, सैय्यदना व मौलाना अब्दुल वाहिद हुसैनी ज़ैदी बलगरामी رضی اللہ تعالیٰ عنہ ने किताब "सबए सनाबिल शरीफ़" लिखी के बारगाहे आ़लम पनाह हुज़ूर सैय्यदुल मुर्सलीन صلی اللہ علیہ وآلہ واصحابہ وسلم में क़ुबूल हुई और अज़ीम और मशहूर हुई । उस किताब में हज़रात औलिया-ए-किराम व मोहद्देसीन और तमाम अहले हक़ के इजमाई अक़ाएद में बयान फ़रमाते है---- واجماع دارند کہ افضل از جملہ بشر بعد انبیا ابوبکر صدیق ست وبعد ازوے عمر فاروق ست وبعد ازوے عثمان ذی النورین ست وبعد ازوے علی مرتضیٰ ست رضی اللہ تعالیٰ عنہم اجمعین

तर्जमा :- और इस पर इजमा (इत्तेफ़ाक़) है के इन्सानों में अम्बिया के बाद हज़रत सिद्दीक़े अकबर अफ़ज़ल है फिर फ़ारूके आज़म फिर ऊसमान ज़ुन्नूरैन और फिर मौला अ़ली मुरतज़ा رضی اللہ تعالیٰ عنہم اجمعین -

- اجماع اصحاب و تابعین و تبع تابعین و سائر علمائے امت ہمبرین عقیدہ واقع شدہ -

फिर फ़रमाया येह तमाम सहाबा-ए-किराम व ताबईन व तबे ताबईन तमाम ओ़लमा-ए-उम्मत का अक़ीदह है जो अभी बयान हुआ ।

येह अक़ीदह है अहले सुन्नत व जमाअ़त और ख़ानदाने ज़ैद शहीद के हम ग़ुलामों का ।

کتبہ
عبدہ المذنب احمد رضا بحمدن المصطفیٰ النبی صلی اللہ علیہ وسلم